

जनवरी के मुख्य कृषि कार्य

राजीव कुमार सिंह*, कपिला शेखावत*, प्रवीण कुमार उपाध्याय* और **एस.एस. राठौर***

"इस माह में कम तापमान और धूप न होने के कारण कई प्रकार की व्याधियों से भी फसलों को बचाना आवश्यक होता है। इस समय प्रमुख फसलों जैसे-गेहूं, जौ, शीतकालीन मक्का, चना, मटर, मसूर, राई-सरसों, अलसी एवं सूरजमुखी, शरदकालीन गन्ना, चारे वाली फसलों; सब्जी फसलों में गोभीवर्गीय,आलू, टमाटर, बैंगन, मटर, प्याज, लहसुन, मूली, गाजर एवं शलजम; बागवानी फसलें जैसे-आम, केला, नीबूवर्गीय फल, अमरूद, पपीता, बेर, लीची, आंवला, कटहल, बेल, करौंदा, अंगूर, लोकाट आदि पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पुष्प एवं सगंध (गुलाब, ग्लैडियोलस, रजनीगंधा व मेंथा) पौधों की भी रखरखाव की आवश्यकता होती है, जिससे अच्छा उत्पादन कृषक ले सकें। अत: कृषि को आर्थिक रूप से लाभदायक बनाने के लिए आवश्यक है कि समयबद्ध कार्यक्रम तथा निश्चित योजना के तहत खेती के कार्य संपन्न किए जाएं। कृषि और किसानों के आर्थिक तथा सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक है कि कृषि की नवीनतम तकनीकियों एवं समसामयिक कृषि सूचनाओं को किसानों के खेत-खलिहान तक उनकी अपनी भाषा में पहुंचाया जाए। इसके लिए **'खेती'** पत्रिका महत्वपूर्ण भमिूका निभा रही है।"

जनवरी का महीना रबी मौसम में अधिक पैदावार लेने और कृषि कार्यों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस महीने में अधिकतर फसलें अपनी क्रांतिक बढ़वार की अवस्था में होती हैं। इस समय तापमान में तीव्र गिरावट होने के कारण पाला, कोहरा एवं ओले की आशंका बनी रहती है। रबी फसलों का उत्पादन मृदा परीक्षण के आधार पर एकीकृत पोषक प्रबंधन, उचित जल एवं खरपतवार प्रबंधन पर ही निर्भर करता है। देर से बोई गयी गेहूं की फसल में क्रांतिक चंदेरी जड़ अवस्था में होती है, जिसके कारण सिंचाई आवश्यक हो जाती है।

गेहूं और जौ

- नाइट्रोजन की शेष एक तिहाई मात्रा का छिड़काव करें। भारी मृदा में प्रति हैक्टर 132 कि.ग्रा. यूरिया की टॉप ड्रेसिंग पहली सिंचाई के 4-6 दिनों बाद और बलुई दोमट मृदा में 88 कि.ग्रा. यूरिया की टॉप ड्रेसिंग पहली सिंचाई तथा प्रति हैक्टर 88 कि.ग्रा. यूरिया की दूसरी टॉप ड्रेसिंग सिंचाई के बाद करें। मृदा जांच के आधार पर यदि बुआई के समय जिंक एवं लोहा नहीं डाला गया हो और पत्ती पर कमी के लक्षण खड़ी फसल में दिखाई दें तो 1.0 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 500 ग्राम बुझा हुआ चूना 200 लीटर पानी में घोलकर 2-3 छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर करनी चाहिए।

*सस्य विज्ञान, भाकृअनुप-भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली-110012

इसी प्रकार मैंगनीज की कमी वाली मृदा में 1.0 कि.ग्रा. मैंगनीज सल्फेट को 200 लीटर पानी में घोलकर पहली सिंचाई के 2-3 दिनों पहले एवं आयरन सल्फेट के 0.5 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करना चाहिए। इसके बाद आवश्यकतानुसार एक सप्ताह के अंतर 2-3 छिड़काव की आवश्यकता होती है। छिड़काव साफ मौसम एवं खिली हुई धूप में ही करें।

- गेहूं की फसल की सम्पूर्ण अवधि में लगभग 35-40 सें.मी. जल की आवश्यकता होती है। इसकी क्राउन (छत्रक) जड़ों तथा बालियों के निकलने की अवस्था में सिंचाई अति आवश्यक होती है, अन्यथा उपज पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। गेहूं के लिए सामान्यत: 4-6 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। भारी मृदा में 4 तथा हल्की मृदा में 6 सिंचाइयां पर्याप्त होती हैं। गेहूं में 6 अवस्थायें ऐसी हैं, जिनमें सिंचाई करना लाभप्रद रहता है। लेकिन सिंचाइयों की उपलब्धता के अनुसार सारणी-1 के अनुसार सिंचाई करनी चाहिए।
- देर से बोये गये गेहूं में पहली सिंचाई बुआई के 18-20 दिनों बाद तथा बाद की सिंचाई 15-20 दिनों के अन्तराल पर करते रहें। वहां भी सिंचाई के बाद एक तिहाई नाइट्रोजन का छिड़काव करना होगा।
- सामान्यत: खरपतवार, फसलों को प्राप्त होने वाली 47 प्रतिशत नाइट्रोजन, 42 प्रतिशत फॉस्फोरस, 50 प्रतिशत पोटाश, 24 प्रतिशत मैग्नीनीशियम एवं 39 प्रतिशत कैल्शियम तक का उपयोग कर लेते हैं। इसके साथ-साथ खरपतवार, फसलों के लिए नुकसानदायक कीटों तथा रोगों को भी आश्रय देकर फसलों को क्षति पहुंचाते हैं। इनका नियंत्रण भी एक कठिन समस्या है, किन्तु हाल के वर्षों में अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि इनका नियंत्रण प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।
- कम तापमान रहने के कारण यद्यपि रोगों का खतरा कम रहता है। फफूंदजनित रोग के लक्षण दिखाई देने पर प्रोपिकोनॉजोल का 0.1 प्रतिशत अथवा मैंकोजेब का 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव किया जा सकता है। गेहूं की फसल को चूहों से बचाने के लिए जिंक फॉस्फाइड या एल्यूमिनियम फॉस्फाइड की टिकियों से बने चारे का प्रयोग कर सकते हैं।
- जौ की फसल में दूसरी सिंचाई बुआई के 55-60 दिनों बाद गांठ बनने की अवस्था में करनी चाहिए।



ड्यूरम गेहूं की नई प्रजाति पूसा तेजस

सारणी 1. गेहूं में सिंचाई

सिंचाइयां	सिंचाई का समय (बुआई के बाद, दिनों में)
पहली सिंचाई	बुआई के 20-25 दिनों बाद मुख्य जड़ बनते समय।
दूसरी सिंचाई	दूसरी सिंचाई बुआई के 40-45 दिनों बाद कल्लों के विकास के समय।
तीसरी सिंचाई	बुआई के 65-70 दिनों बाद तने में गांठ पड़ते समय।
चौथी सिंचाई	बुआई के 90-95 दिनों बाद फूल आते समय।
पांचवीं सिंचाई	बुआई के 105-110 दिनों बाद दानों में दूध पड़ते समय।
छठी/अंतिम सिंचाई	बुआई के 120-125 दिनों में जब दाना सख्त हो रहा हो, करनी चाहिए।

सारणी 2. गेहूं में खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार	शाकनाशी रसायन	मात्रा ग्राम/हैक्टर	प्रयोग का समय
संकरी पत्ती वाली घास के लिये	पेन्डीमेथिलीन (स्टाम्प 30 ई.सी.)	1000-1500 (3333-4950)	बुआई के 1-3 दिनों के अन्दर
	आइसोप्रोट्यूरॉन (एरिलान 75 डब्ल्य पी.)	1000 (1333)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	सल्फोसलफ्यूरॉन 75 प्रतिशत+मेटासल्फ्यूरॉन 5 प्रतिशत (टोटल 80 (75+5) डब्ल्यू.डी.जी.)	30+2(40)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	क्लोडिनोफॉप (टोपिक 15 डब्ल्यू.पी.)	60 (400)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	फीनाक्सीप्राप-ईथाइल (प्यूमा सुपर 10 ई.सी.)	100-120 (1000-1200)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	पीनाक्साडेन (एक्सिल 5 ई.सी.)	35-40 (700-800)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	सल्फोसलफ्यूरॉन (लीडर 75 डब्ल्यू.जी.)	25 (33.3)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
चौड़ी पत्ती वाली घास के लिये	2,4-डी.-ई (बीड वार 38 ई.सी.)	500 (1315)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	मेटसल्फ्यूरॉन (अलग्रिप 20 डब्ल्यू.पी.)	4 (20)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	कारफेनटाजोन (अफीनीटी 50 डब्ल्यू.डी.जी.)	20 (50)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
संकरी एवं चौड़ी पत्ती वाली घास के लिये	आइसोप्रोटयूरॉन (एरिलान 75 डब्ल्यू.पी.)+2,4-डी.ई)	750+500 (1000-1315)	बुआई के 30-35 दिनों बाद
	मीसोसल्फ्यूरॉन+आयोडोसल्फ्यूरॉन ऐटलेंनटीस 3.6 (3+0.6) डब्ल्यू. डी.जी.	12+2+2 (400)	बुआई के 30-35 दिनों बाद

- पत्ती व तनाभेदक की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 200 ग्राम प्रति हैक्टर या क्यूनालफॉस 25 ई.सी. दवा 250 ग्राम/हैक्टर का प्रयोग करें या प्रोपिकोनाजोल 0.1 प्रतिशत के घोल का छिड़काव करें।
- **मोल्या:** रोगग्रस्त पौधे पीले व बौने रह जाते हैं। इनमें फुटाव कम होता है तथा जड़ें छोटी व झाड़ीनुमा हो जाती हैं। जनवरी-फरवरी में छोटे-छोटे गोलाकार सफेद चमकते हुए मादा सूत्रकृमि जड़ों पर साफ दिखाई देते हैं, जो इस रोग की खास पहचान है। यह रोग समय पर बोये गेहूं पर नहीं आता है। संभावित रोगग्रस्त खेतों में 6 कि.ग्रा. एल्डीकार्व या 13 कि.ग्रा. कार्बोफ्यूरॉन बुआई के समय खाद में मिलाकर डालें। पाले से बचाव के लिए खेतों के आस-पास धुआं करें, जिससे तापमान बढ़ जाता है तथा पाला पड़ने की आशंका कम हो जाती है। अधिक सर्दी वाले दिनों में शाम के समय सिंचाई करने से भी पाले से बचाव होता है।

मटर, मसूर और चना

- मटर की फसल में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू), जिसमें पत्तियों, तनों तथा फलियों पर सफेद चूर्ण सा फैल जाता है, की रोकथाम के लिए 3.0 कि.ग्रा. घुलनशील गंधक 600 लीटर पानी में घोलकर/हैक्टर की दर से 10-12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें। मटर में 10-15 दिनों के अंतर से फलियां तोड़ी जाती हैं। झुलसा रोग की रोकथाम के लिए प्रति हैक्टर 2.0 कि.ग्रा. जिंक मैग्नीज कार्बामेंट को 600 लीटर पानी में घोलकर फूल आने से पूर्व व 10 दिनों के अन्तराल पर दूसरा छिड़काव करें।
- मटर की फसल में फलीछेदक के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरोप्रिड 200 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर की दर से 600 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। मटर में पत्तीभेदक के लिए मेटासिस्टॉक्स 20 ई.सी. दवा का 1 लीटर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। मटर में बुकनी रोग यानी पाउडरी मिल्ड्यू की रोकथाम के लिए 3 कि.ग्रा. घुलनशील गंधक 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर भूमि में 10-12 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- मसूर की फसल में 'व्हील हैंड हो' की सहायता से खरपतवार निकाल दें। इससे फसल में वृद्धि होगी। एक सिंचाई फूल आने के पूर्व करनी चाहिए। धान के खेतों में बोई गई मसूर की फसल में यदि वर्षा न हो, तो एक सिंचाई फली बनने के समय करनी चाहिए।
- चने की फसल में दूसरी सिंचाई फलियों में दाना बनते समय की जानी चाहिए। यदि जाड़े में वर्षा हो जाये, तो दूसरी सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। लम्बे समय तक वर्षा न हो, तो अच्छी पैदावार लेने के लिये हल्की सिंचाई करें। अनावश्यक रूप से सिंचाई करने पर पौधों की वानस्पतिक वृद्धि ज्यादा हो जाती है, जिसका उपज पर प्रतिकूल



चने की फसल

शीतकालीन मक्का



- नाइट्रोजन की 40 कि.ग्रा. मात्रा की टॉप ड्रेसिंग मंजरी निकलने के पूर्व करें। उर्वरक प्रयोग के समय खेत में पर्याप्त नमी होनी चाहिए।
- रबी मक्का में 4-5 सिंचाइयां करनी पड़ती हैं। मक्का में दूसरी सिंचाई बुआई के 55-60 दिनों बाद, तीसरी सिंचाई बुआई के 75-80 दिनों बाद, चौथी 110-115 दिनों तथा पांचवीं 120-125 दिनों बाद करनी चाहिए। अगर आवश्यकता हो तो अतिरिक्त सिंचाई खेत की नमी के अनुसार करना उपयुक्त होगा। मक्का में दूसरी निराई-गुड़ाई 40-45 दिनों बाद करें। यदि मक्का को हरे भुट्टों के रूप में प्रयोग करना हो, तो रसायनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- शिशु मक्का की गुल्ली को 3-4 सें.मी., रेशमी कोपलें आने पर तोड़ लेना चाहिए। गुल्ली की तुड़ाई के समय ऊपर की पत्तियों को नहीं हटाना चाहिए। पत्तियों को हटाने से ये जल्दी खराब हो जाती हैं। रबी में एक दो दिन छोड़कर गुल्ली की तुड़ाई करनी चाहिए।

मसूर



मसूर की फसल में जड़सड़न रोग में बुआई के 20-25 दिनों बाद पौधा सूखने लगता है। पौधे को उखाड़कर देखने पर तने पर रूई के समान फफूंद लिपटी हुई दिखाई देती है। मसूर की फसल में उकठा रोग में पौधा धीरे-धीरे मुरझाकर सूख जाता है। छिलका भूरे रंग का हो जाता है तथा जड़ को चीर कर देखें, तो उसके अन्दर भूरे रंग की धारियां दिखाई देती हैं। उकठा का प्रकोप पौधे की किसी भी अवस्था में हो सकता है। जड़सड़न एवं उकठा रोग के नियंत्रण के लिए जिस खेत में प्राय: उकठा लगता हो, तो यथासम्भव उस खेत में 3-4 वर्ष तक मसूर की फसल नहीं लेनी चाहिए। उकठा से बचाव हेतु नरेन्द्र मसूर-1, पन्त मसूर-4, मसूर-5, प्रिया, वैभव आदि प्रतिरोधी प्रजातियों की बुआई करनी चाहिए। बीजजनित रोगों के नियंत्रण हेतु थीरम 75 प्रतिशत + कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत (2:1) 3.0 ग्राम या ट्राइकोडर्मा 4.0 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित कर बुआई करनी चाहिए। मृदा एवं बीजजनित रोगों के नियंत्रण हेतु जैव कवकनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर 60-75 कि.ग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8-10 दिनों तक छाया में रखने के उपरान्त बुआई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला देने से मसूर के बीज/मृदाजनित रोगों का नियंत्रण हो जाता है।

प्रभाव पड़ता है। चने की फसल से भरपूर पैदावार हेतु जल निकास की उचित व्यवस्था होनी चाहिए अन्यथा फसल के मरने का अंदेशा रहता है।

- नवीनतम प्रयोगों से यह सिद्ध हुआ है कि 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का दो पर्णीय छिड़काव 10 दिनों के अन्तराल पर फली में दाना बनते समय करने से उपज में निश्चित रूप से 15-20 प्रतिशत तक की वृद्धि होती है।
- उकठा रोग एक फफूंदी *(फ्यूजेरियम ऑक्सीस्पोरम प्रभेदसाइसेरि)* द्वारा होता है। फसल में इस रोग से सामान्यत: संक्रमित पौधे का ऊपरी भाग मुरझा जाता है। पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं, जिससे संक्रमित पौधे दूर से ही पहचाने जा सकते हैं। अंत में पौधा पूर्ण रूप से सूखकर मर जाता है। यह पौधे को किसी भी अवस्था में संक्रमित कर सकता है। परन्तु सामान्यत: फसल की पौध अवस्था या फिर फसल की फूल व फली लगने वाली अवस्था में इस रोग का प्रकोप अधिक होता है। इसकी रोकथाम के लिये उकठा अवरोधी प्रजातियों (पूसा 372, पूसा 329, पूसा 362, पूसा चमत्कार (बी. जी. 1053-काबुली), पूसा 1003 (काबुली), के.डब्ल्यू.आर. 108, जे. जी. 74, डी.सी.पी. 92-3, जी.एन. जी. 1581, जी.पी.एफ. 2, हरियाणा चना 1 का चयन करें। सरसों के साथ अन्त: फसल की 4:1 या 4:2 अनुपात में बुआई करें व बीजोपचार-जैव नियंत्रक फफूंदी ट्राइकोडर्मा (4 ग्राम) + वीटावेक्स (1 ग्राम) प्रति कि.ग्रा. बीज को शोधित करने के बाद बुआई करें।
- ***शुष्क जड़गलन रोग (राइजोक्टोनिया बटाटीकोला):*** यह रोग बड़े पौधों में फूल एवं फलियां बनते समय दृष्टिगोचर होता है। इसकी रोकथाम के लिये शुष्क जड़गलन सहिष्णु प्रजातियां जैसे एच. 355 तथा आई.सी.सी.वी. 10 उगायें। इस रोग से बचाव के लिये बुआई के समय कार्बेन्डाजिम या थीरम (1:2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) या वीटावैक्स तथा ट्राइकोडर्मा विरडी 4 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज में मिलाकर या बेनोमिल (2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज) द्वारा उपचार करना चाहिये।
- चने के खेत में चिड़िया बैठ रही हो तो यह समझ लें कि चने में फलीछेदक का प्रकोप होने वाला है। चने की फसल में फलीछेदक कीट हमला करता है, जिसकी गिडारें हल्के हरे रंग की होती हैं और बाद में भूरे रंग की हो जाती हैं। ये फलियों को छेदकर अपने सिर को फलियों के अन्दर डालकर दानों को खा जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिये फली बनना प्रारम्भ होते ही मोनोक्रोटोफॉस 36 ई.सी. की 750 मि.ली. या फेनवेलरेट 20 ई.सी. की 500 मि.ली. मात्रा 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर खेत में छिड़काव करें। फसल में पहला छिड़काव 50 प्रतिशत फूल आने के बाद करें। यदि छिड़काव के लिये रसायन उपलब्ध नहीं हो, तो मिथाइल पॅराथियॉन 2 प्रतिशत धूल की 25 कि.ग्रा. मात्रा का छिड़काव करें।
- चने की फलीछेदक के लिए न्यूक्लियर पालीहेड्रोसिस वाइरस (एनपीवी) 250 से 350 शिशु समतुल्य 600 लीटर प्रति पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। चने में 5 प्रतिशत एन.एस.के.ई. या 3 प्रतिशत नीम ऑयल तथा आवश्यकतानुसार कीटनाशी का प्रयोग करें।
- प्रथम सिंचाई आवश्यकतानुसार बुआई के 45-60 दिनों बाद (फूल आने के पहले) तथा दूसरी फलियों में दाना बनते समय की जानी चाहिए। यदि जाड़े की वर्षा हो जाये, तो दूसरी सिंचाई की आवश्यकता नहीं होगी। फूल आते समय सिंचाई न करें अन्यथा लाभ की बजाय हानि हो जाती है। सिंचाई के लगभग एक संप्ताह बाद ओट आने पर हल्की गुड़ाई करना लाभदायक होता

है। असिंचित या देर से बुआई की दशा में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का फूल आने के समय छिड़काव करें।

राई-सरसों, अलसी एवं सूरजमुखी

- सरसों-राई की फसल में सिंचाई, जल की उपलब्धता के आधार पर कर सकते हैं। यदि एक सिंचाई उपलब्ध है, तो 50-60 दिनों की अवस्था पर करें। दो सिंचाई उपलब्ध होने की अवस्था में पहली सिंचाई बुआई के 40-50 दिनों बाद एवं 35 दिनों के अन्तराल पर करें। फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए 20-25 दिनों में एक बार निराई-गुड़ाई करना आवश्यक है। यह देखा गया है कि इस निराई के बाद सरसों की फसल अच्छी तरह और जल्दी से बढ़ती है।
- सरसों में माहूं का प्रकोप दिसंबर से जनवरी में बादल वाले मौसम में अधिक होता है। इससे बचाव के लिए सरसों की बुआई मध्य अक्टूबर तक अवश्य कर देनी चाहिए। इससे फसल पर माहूं का कम प्रयोग होगा। यदि फिर भी प्रकोप होता है, तो मैलाथियॉन दवा की एक लीटर या फॉस्फेमिडान 85 प्रतिशत की 250 मि.ली. मात्रा को प्रति हैक्टर की दर से 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- सरसों की फसल में सफेद रतुआ की रोकथाम के लिए एप्रान 35 एड.डी. 6 ग्राम या बैविस्टिन 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार करें। बीज उपचार के अलावा बुआई के 50-60 दिनों बाद रोग के लक्षण दिखाई देते ही फफूंदनाशक दवा रिडोमिल एम.जैड.-72 डब्ल्यू. पी. का 2 ग्राम/लीटर पानी की दर से 600-800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर 15 दिनों बाद इंडोफिल का छिड़काव करें। झुलसा रोग का प्रकोप हो, तो जिंक मैग्नीज कार्बामेंट 75 प्रतिशत की 2.0 कि.ग्रा. या जीनेब 75 प्रतिशत की 2.5 कि.ग्रा. मात्रा को 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। सरसों के पत्ते के धब्बा रोग की रोकथाम के लिए बोने से पूर्व बीज का उपचार बैविस्टिन या थीरम दवा की 2.5 ग्राम मात्रा/कि.ग्रा. बीज दर से करें। रोग दिखाई देने पर ही फफूंदीनाशक ब्लाइटॉक्स-50 या डायथेन एम-45 की 500-600 ग्राम मात्रा को 200 लीटर पानी में घोलकर/एकड़ फसल पर 10-15 दिनों के अन्तराल पर 2-3 छिड़काव करें।
- तोरिया की फसल पक जाने पर समय पर कटाई करें। देरी करने पर फलियों से दाने गिरने का डर रहता है।



सरसों

- जहां सिंचाई का साधन उपलब्ध है, वहां दो सिंचाई पहली फूल आने पर तथा इसके बाद दाना बनते समय करने से उपज में बढ़ोतरी होती है।
- रोग में पत्तियों की ऊपरी सतह पर गहरे कत्थई रंग के धब्बे बनते हैं, जो गोल छल्ले के रूप में पत्तियों पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। यह रोग तने, शाखाओं एवं फलियों को भी प्रभावित करता है। तीव्र प्रकोप की दशा में फलियां काली होकर मर जाती हैं। गेरूई रोग में पत्तियों, पुष्पक्रमों तथा तने पर नारंगी रंग के फफोले बनते हैं, जिससे पत्तियां पीली होकर सूखने लगती हैं। अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग के नियंत्रण हेतु थीरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.एस. 2.5 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से बीजशोधन कर बुआई करनी चाहिए। अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा एवं गेरूई रोग के नियंत्रण हेतु मैंकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. की 2.0 कि.ग्रा. मात्रा का प्रति हैक्टर लगभग 600-750 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। भूमि एवं बीजजनित रोगों के नियंत्रण हेतु जैव कवकनाशी ट्राइकोडर्मा विरिडी 1 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. अथवा ट्राइकोडर्मा हारजिएनम 2 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. की 2.5 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर 60-75 कि.ग्रा. सड़ी हुए गोबर की खाद में मिलाकर हल्के पानी का छींटा देकर 8-10 दिनों तक छाया में रखने के उपरान्त बुआई के पूर्व आखिरी जुताई पर मृदा में मिला देना अलसी के बीज के मृदाजनित रोगों के प्रबंधन में सहायक होता है। अलसी की फसल में पाउडरी मिल्ड्यू रोग नियंत्रण के लिए 3 ग्राम सल्फेक्स प्रति लीटर पानी में घोल कर 15 दिनों के अंतराल पर 2-3 बार छिड़काव करें।
- अलसी की फसल में फली मक्खी कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोरोप्रीड 17.8 का 500 मि.ली. प्रति हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर फली बनने से पहले 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- सूरजमुखी की बुआई जनवरी में भी हो सकती है। दिसंबर में बोई गयी फसल में नाइट्रोजन की दूसरी व अंतिम किस्त एक बोरा यूरिया बुआई के 30 दिनों

शरदकालीन गन्ना

- तापमान कम होने के कारण दिसंबर-जनवरी में काटे गये गन्ने की जड़ से फुटाव कम होता है। अत: दिसंबर-जनवरी में गन्ने की कटाई जमीन की सतह से सटा कर करें। गन्ना काटने के तुरन्त बाद ठूंठों पर 2-4 डी खरपतवारनाशक की मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें तथा गन्ने की सूखी पत्तियों की 15-20 सें.मी. मोटी तह सतह के ऊपर बिछा दें जिससे फुटाव अधिक होगा। गन्ने की तैयार फसल की कटाई की जाती है एवं कटाई के बाद गुड़ बनाया जाता है। गन्ने को विभिन्न प्रकार के तनाछेदक कीटों से बचाने के लिए प्रति हैक्टर 30 कि.ग्रा. फ्यूराडॉन का प्रयोग करें।



- शरदकालीन गन्ने के साथ ली जाने विभिन्न अन्त:फसलों जैसे-मसूर, सरसों, तोरिया, आलू, लहसुन, गेंदा, प्याज धनिया, मेथी, तथा गेहूं आदि में जरूरत के अनुसार निराई, गुड़ाई, कीट प्रबंधन एवं संतुलित उर्वरकों का प्रयोग करें। अच्छी पेड़ी की फसल लेने के लिए गन्ने की मुख्य फसल की कटाई 15 जनवरी से 25 फरवरी तक करें।
- बसंतकालीन गन्ने की बुआई का उपयुक्त समय पूर्वी उत्तर प्रदेश में मध्य जनवरी से फरवरी, मध्य क्षेत्र मध्य फरवरी से मध्य मार्च तथा पश्चिमी क्षेत्र में मध्य फरवरी से मार्च है। अत: पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसान लाही आदि से खाली खेत में कार्बनिक खादों का प्रयोग करते हुए खेती की तैयारी करें।
- बीज उपचार हेतु पारायुक्त रसायन एग्लाल-3 प्रतिशत (560 ग्राम), एरीटान 6 प्रतिशत (280 ग्राम) या एम.ई.एम.सी. 6 प्रतिशत (280 ग्राम) या बाविस्टिन (110 ग्राम) का प्रयोग करें। 100-125 लीटर पानी में घोलकर गन्ना टुकड़ों को उपचारित करें। बुआई के समय दीमक व अंकुरबेधक नियंत्रण हेतु फोरेट 10 जी.-25 कि.ग्रा. या सेबिडाल 4.4 जी-25 कि.ग्रा./हैक्टर या क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. 5 लीटर/हैक्टर का प्रयोग करें।
- बसन्तकालीन बुआई से पूर्व मृदा परीक्षण करवाएं तथा संस्तुति के अनुसार संतुलित उर्वरक की व्यवस्था करें एवं उनका बुआई के समय उपयोग सुनिश्चित करें। 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश व 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट का प्रयोग करें। पाले से बचाव के लिए खड़ी फसल में जरूरत के अनुसार सिंचाई करें। बसंतकालीन बुआई हेतु कुल क्षेत्रफल का 1/3 भाग शीघ्र पकने वाली प्रजातियों के अंतर्गत रखें। इसके साथ ही बुआई हेतु स्वस्थ बीजों का चयन कर उसका विशेष प्रबंध करें। अगेती पौधे की फसल की कटाई के समय तापमान यदि काफी कम हो, तो न करें। इससे पेड़ी गन्ने में फुटाव उत्तम नहीं होगा।

बाद दें तथा पहली सिंचाई भी करें व फसल उगने के 17 से 20 दिनों बाद गुड़ाई करके खरपतवार निकाल दें।

चारे वाली फसलें (जई और बरसीम)

- जई की फसल में 20-25 दिनों के अन्तराल पर सिंचाई करें। पहली कटाई बुआई के 55 दिनों बाद करें और फिर प्रति हैक्टर 20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन (44 कि.ग्रा. यूरिया) की टॉप ड्रेसिंग कर दें।



बरसीम

- बरसीम, रिजका व जई की प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई करते रहें इससे बढ़वार तुरंत होगी तथा अच्छी गुणवत्ता को चारा मिलता रहेगा।

मेंथा

- मेंथा रोपाई के लिए खेत की तैयारी करते समय अन्तिम जुताई पर प्रति हैक्टर 10 टन सड़ी गोबर खाद,



मेंथा

50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 60 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 45 कि.ग्रा. पोटाश खेत में अच्छी तरह मिला दें। मेंथा के एक हैक्टर में रोपाई के लिए 2.5-5.0 क्विंटल सकर्स पर्याप्त होते हैं। मेंथा की उन्नत प्रजातियां कोसी, एच.वाई.-77 एवं गोमती प्रमुख हैं। मेंथा की रोपाई 45-60 सें.मी. की दूरी पर पंक्तियों में 2-3 सें.मी. की गहराई में करें।

सब्जी वाली फसलें

- गोभी की बढ़वार और फूल के बनने एवं विकास के लिए वांछित तापमान पर आधारित फूलगोभी की किस्मों के विकास से अब लगभग पूरे वर्ष फूलगोभी उगाना संभव हो गया है। गोभीवर्गीय सब्जियों की फसल में सिंचाई, गुड़ाई तथा मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें। फूलगोभी के फूल उस समय काटने चाहिये, जब वे ठोस, सफेद व धब्बेरहित बिलकुल साफ हों और फूल के साथ पत्तियों के कम से कम दो चक्र भी हों। पत्तियों के ऊपरी चक्र में काफी पोषक तत्व होते हैं। अत: उनको भी फूल के साथ उपयोग करना चाहिये।
- तैयार फूलगोभी, पातगोभी एवं गांठगोभी की कटाई व छंटाई करें एवं बाजार भेजने की व्यवस्था करें। गोभीवर्गीय फसलों को तब काटें, जब वह बंधी और कोमल हो। यदि कटाई में देर हो गई, तो गांठें फट सकती हैं। कटाई करते समय दो-तीन बाहरी पत्तियां रखें, जिससे बाजार ले जाते समय गांठें खराब न हों। बीज वाली फसल से अवांछित पौधों को निकालें।

टमाटर



इस माह के अंत में ग्रीष्मकालीन टमाटर की फसल की रोपाई करें। टमाटर की रोपाई के समय उन्नत प्रजातियों के लिए प्रति हैक्टर 40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 60 कि.ग्रा. पोटाश, 20-25 कि.ग्रा. जिंक एवं 10-12 कि.ग्रा. बोरेक्स व संकर किस्मों में उर्वरक की अन्य मात्रा के साथ नाइट्रोजन की 60 कि.ग्रा. मात्रा का प्रयोग प्रति हैक्टर की दर से करना चाहिए। टमाटर की रोपाई 60×45 या 60×60 सें.मी. की दूरी पर करें। टमाटर में खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रति हैक्टर 1.0 कि.ग्रा. स्टाम्प की दर से रोपाई के दो दिनों बाद प्रयोग करें।

मूली



पूसा हिमानी मूली किस्म दिसंबर से फरवरी तक लगा सकते हैं। यह 40 से 70 दिनों में तैयार हो जाती है तथा हल्का तीखा स्वाद देती है। जापानी व्हाइट मूली खेत में है, तो सिंचाई तथा गुड़ाई समय-समय पर करें तथा खरपतवार निकाल दें। मूली व गाजर को तैयार होने पर उखाड़ने से 2-3 दिनों पहले हल्की सिंचाई करें। इन फसलों को उखाड़ने में देर न करें। देर से इनकी गुणवत्ता खराब हो जाती है तथा मूल्य भी कम मिलता है।



फूलगोभी



मटर की प्रजाति पूसा कार्तिकी

- सब्जी मटर में फूल आते समय हल्की नमी होनी चाहिए, अन्यथा आवश्यकता होने पर हल्की सिंचाई करें। आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई फलियां बनते समय करनी चाहिए।
- आलू की फसल में जनवरी के प्रथम सप्ताह तक पौधों के ऊपरी भाग को काट दें। उसके बाद आलू को 20-25



आलू

दिनों तक जमीन के अन्दर ही पड़े रहने दें। ऐसा करने से आलू का छिलका कड़ा हो जायेगा और खराब नहीं होगा। 20 से 25 दिनों बाद खुदाई करके साफ-सुथरे कन्दों का चयन करें। आलू बीजोत्पादन वाली फसल में पत्तियों की कटाई का कार्य 15 जनवरी से पहले अवश्य कर दें तथा कटे हुए पत्तों को खेत से बाहर गड्ढे में दबा दें।

- पहले रोपी गई टमाटर की फसल में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई, सिंचाई व पौधों को सहारा देने का कार्य करें। नवम्बर में रोपी गयी टमाटर की उन्नत किस्मों में प्रति हैक्टर 88 कि.ग्रा. यूरिया व संकर किस्मों के लिए 130 कि.ग्रा. यूरिया की प्रथम टॉप ड्रेसिंग के 20-25 दिनों बाद दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें।
- टमाटर नवम्बर में लगाई नर्सरी जनवरी में रोपी जा सकती है, परंतु पाले से बचाव करते रहें। प्रत्येक 10 दिनों बाद हल्की सिंचाई करते रहें। टमाटर के खेत में खरपतवार बिल्कुल नहीं होने चाहिए। इन्हें समय-समय पर निकालते रहें। पुरानी फसल में यदि फलछेदक कीट का संक्रमण हो जाए, तो खराब फलों को तुरंत तोड़कर नष्ट कर दें। अधिक संक्रमण की स्थिति में 0.1 प्रतिशत मैलाथियान या 0.1 प्रतिशत थायोडान 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़कें या छिड़काव से पहले तैयार फल तोड़ लें तथा अगली तुड़ाई 17 दिनों बाद करें ।
- सब्जियों में आवश्यकतानुसार सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई करते रहें। आलू, टमाटर तथा मिर्च में पछेती झुलसा तथा माहूं से बचाव हेतु मैंकोजेब 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/लीटर पानी) के साथ मोनोक्रोटोफॉस 0.04 प्रतिशत (4 मि.ली. 10 लीटर पानी में) के घोल का छिड़काव करें।
- लहसुन की फसल में आवश्यकतानुसार समय पर सिंचाई तथा गुड़ाई करते रहें। लहसुन में नाइट्रोजन की दूसरी टॉप ड्रेसिंग करें और बुआई के 50-60 दिनों बाद 74 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
- जिस खेत में प्याज की रोपाई करनी

पालक



पालक, मेथी एवं धनिया की पत्तियों की कटाई कर बाजार भेजें। यदि इनसे बीज लेना हो, तो पत्तियां काटना बन्द कर दें तथा फसल में 25 कि.ग्रा. यूरिया प्रति हैक्टर की दर से टॉप ड्रेसिंग करें। प्रत्येक 17-20 दिनों बाद कटाई करके पालक में 20 कि.ग्रा. तथा मेथी में 10 कि.ग्रा. यूरिया छिड़ककर हल्की सिंचाई करें तथा खरपतवार निकाल दें। कीट नियंत्रण के लिए दवा प्रयोग न करें, परंतु बहुत अधिक आक्रमण होने पर कटाई करके खेत में 2 मि.ली. मैलाथियान 70 ईसी प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।



प्याज

चाहते हो, उसकी 2-3 बार जुताई करके पाटा चलाकर समतल कर लें। यदि मृदा की जांच उपलब्ध न हो, तो रोपाई से 15-20 दिनों पहले 20-25 टन गोबर की सड़ी हुई खाद डालें व रोपाई के समय 50 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 50 कि.ग्रा. फॉस्फोरस एवं 80-100 कि.ग्रा. पोटाश मृदा में मिलाएं। तैयार खेत में पंक्ति से पंक्ति एवं पौधे से पौधे के बीच की दूरी 15×10 सें.मी. रखते हुये 2 सें.मी. की गहराई पर रोपाई कर दें। रोपाई के समय खेत में नमी बनाये रखें एवं 3-4 बार हल्की सिंचाई करें। प्याज की रोपाई का काम भी किसान भाई इस माह के प्रथम सप्ताह तक पूरा कर लें।

- बैंगन की शरद मौसमी फसल लगा रखी है, तो समय पर फलों की तुड़ाई करें। बैंगन में फल तब तोड़े जाने चाहिए, जब वे मुलायम हों और उनमें ज्यादा बीज न बने हों।
- मिर्च की नवंबर में लगाई गई नर्सरी जनवरी में रोपी जा सकती है। पंक्तियों व पौधों में 18 इंच का फासला रखें और फैलने वाली प्रजातियों में फासला 24 इंच तक बढ़ा दें। रोपाई से पहले खेत में लगभग 10.0 टन गोबर की सड़ी खाद, 1 बोरा यूरिया (1/2 नाइट्रोजन की दूसरी किस्त), 1.7 बोरा सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 1 बोरा पोटाश का प्रयोग करें। सर्दियों में 10-17 दिनों बाद हल्की सिंचाई से फूल व फल गिरते नहीं हैं व फसल पाले से भी बची रहती है।
- गाजर की पूसा रुधिरा और पूसा आसिता किस्में सही समय पर बुआई करने पर इस माह में उपलब्ध होने लगती हैं।
- इस माह में बोई गयी शिमला मिर्च मई में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।
- सेम (फ्रेंचबीन) को सभी प्रकार की मृदा में उगाया जा सकता है। मैदानी क्षेत्रों में यह 20 से 30 जनवरी तक बोयी जा सकती है। झाड़ीनुमा किस्मों को, नटनडर व पूसा सरवती के 37 कि.ग्रा. बीज को 2 फुट पंक्तियों में तथा 8 इंच पौध की दूरी पर लगाएं। लम्बी ऊंची किस्में कैन्टुकी व हेमलता के 17 कि.ग्रा. बीज को 3 फुट पंक्तियों में तथा 1 फुट पौधे में दूरी पर लगाएं। बेलें चढ़ाने के लिए लकड़ी या लोहे के खम्बे लगाएं। बीजाई से पहले खेत में 100 क्विंटल गोबर की सड़ी खाद, 4 बोरे सिंगल सुपर फॉस्फेट, 1 बोरा म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 1 बोरा यूरिया डालें। पहली सिंचाई, बीजाई के 17 दिनों बाद करें।
- राजमा की बुआई भी इस महीने की जा सकती है। इसके लिए इसकी उन्नत व अधिक पैदावार देने वाली किस्मों का चयन किया जा सकता है। राजमा की उन्नत प्रजातियों में पी.डी.आर.-14, मालवीय-15, मालवीय-137, वीएल-63, अम्बर, उत्कर्ष शामिल हैं। ये प्रजातियां कम समय में तैयार हो जाती हैं। राजमा की खेती के लिए 120 से लेकर 140 कि.ग्रा. बीज की प्रति हैक्टर जरूरत होती है। राजमा की बुआई करते समय पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30-40 सें.मी. होनी चाहिए। बीज को 8-10 सें.मी. गहराई में थीरम से उपचार करने के बाद डालना चाहिए, ताकि पर्याप्त नमी मिल सके।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों के लिए खेत की तैयारी के समय 20-25 टन सड़ी गोबर की खाद या 7-8 टन नाडेप कम्पोस्ट प्रति हैक्टर की दर से मृदा



बैंगन



सेम

में मिला दें। बुआई से पूर्व प्रति हैक्टर 15-20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 25 कि.ग्रा. फॉस्फोरस व 25 कि.ग्रा. पोटाश आपस में मिलाकर बोने वाली नालियों या थावले बनाकर मृदा में अच्छी तरह मिला दें। इसके बाद एक स्थान पर 2-3 बीज की बुआई करें।

- चप्पन कद्दू की ऑस्ट्रेलियाई ग्रीन और पूसा अलंकार किस्मों की इस माह में बुआई कर सकते हैं। पूसा अलंकार की पैदावार 45 टन/हैक्टर तक होती है। वॉक इन टनल में चप्पन कद्दू तथा अन्य कद्दूवर्गीय फसलों जैसे-लौकी आदि बेमौसमी फसलें लगाकर अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है।



खीरा



लाल भिंडी

- खीरावर्गीय बेमौसमी फसलों को पॉलीहाउस में कैप्टॉन 0.10-2.0 ग्राम/लीटर की दर से बीज को उपचारित कर 1-2 बीजों को पॉलीथीन थैलियों में बो दिया जाता है।
- इस माह के अन्त में जायद में मिर्च, कद्दूवर्गीय, भिंडी, फ्रेंचबीन, लोबिया एवं बैंगन की फसलों के लिए खेत तैयार करना अभी से शुरू कर दें। इस माह में बेबी मक्का की बुआई भी की जा सकती है।
- यह समय भिंडी की बुआई भी किए जाने के लिए उपयुक्त है। भिंडी की बुआई के लिए इसकी पूसा ए-4, पूसा ए-5, परभनी क्रांति, पूसा सावनी, पंजाब पद्मनी, अर्का भय, अर्का अनामिका, पंजाब-7, पंजाब-13 भिंडी उन्नत किस्में मानी जाती हैं। अन्य किस्मों में वर्षा, उपहार, वैशाली, लाल हाइब्रिड, ई. एम.एस.-8 (म्यूटेंट), विजय, विशाल आदि आती हैं। आप क्षेत्र के अनुकूल उन्नत किस्म का चुनाव कर बुआई कर सकते हैं। सामान्यत: बुआई करते समय पंक्ति से पंक्ति की दूरी 4-5 सें.मी. तथा बीज से बीज की दूरी 60 सें.मी. रखी जाती है।
- लोबिया की बुआई के लिए यह समय उपयुक्त है। इसके लिए खेत की तैयारी करें और इसकी अच्छी किस्मों का चयन करें। इसकी उन्नत प्रजातियों में पूसा कोमल, अर्का गरिमा व पूसा दो फसली किस्मों का चयन किया जा सकता है। इसमें पूसा कोमल लोबिया की ऐसी किस्म है, जो बैक्टीरियल ब्लाइट प्रतिरोधी है।



लौकी



लोबिया

बागवानी फसलें

- जनवरी में आम के पेड़ों में बौर आना शुरू हो जाता है। इसलिए किसानों को अच्छा उत्पादन पाने के लिए अभी से इसकी देखभाल करनी होगी। अगर जरा सी चूक हुई, तो रोग और कीट पूरी फसल को बर्बाद कर सकते हैं।
- जनवरी, अंगूर, आड़ू, अनार व नाशपाती के पौधे लगाने के लिए सर्वोत्तम समय है। इस समय दीमक नियंत्रण जरूर करें।
- अमरूद के बागों की कटाई-छंटाई का कार्य पौधरोपण के दूसरे वर्ष के दौरान भी जारी रखा जाता है। दो वर्षों के बाद, कैनॉपी की परिधि के भीतर वाली छोटी शाखायें सघन तथा सशक्त ढांचे का निर्माण करती हैं। सही तरीके से सधाई तथा छंटाई द्वारा तैयार किये गये पौधे का व्यास दो मीटर तथा ऊंचाई 2.5 मीटर तक सीमित रखने हेतु प्रत्येक वर्ष जनवरी-फरवरी में कल्लों की कटाई की जाती है।
- अमरूद, आम,आंवला, लीची, पपीता एवं केला के नवरोपित बागों की

रजनीगंधा



इसके बल्बों की रोपाई हेतु क्यारियों में 45 सें.मी. गहरी खुदाई करके 15 दिनों के लिए छोड़ दें। खेतों तथा क्यारियों की नियमित निराई करके इन्हें साफ रखना चाहिए। यह कार्य माह में एक बार किया जा सकता है। खेतों को साफ-सुथरा रखने से पौधे स्वस्थ रहते हैं और प्रति इकाई क्षेत्र से अधिक आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। पुष्पों का आगमन कंदों के रोपण से 60-90 दिनों बाद प्रारम्भ हो जाता है तथा जाड़े तक चलता रहता है। स्पाइक को तेज चाकू या ब्लेड से काटकर 100-100 के बंडल बनाकर पुष्प बाजार में विक्रय हेतु भेजा जाता है।

पुष्प व सगंध पौधे

- गुलाब में समय-समय पर सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई करें तथा आवश्यकतानुसार बडिंग व इसके जमीन में लगाने का कार्य कर लें। गुलाब में माहूं, दीमक एवं सल्क कीट के दिखाई देने पर तुरंत डाईमिथोएट 1.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी में या मोनोक्रोटोफॉस 1 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर 2-3 छिड़काव करने चाहिए। दीमक के नियंत्रण हेतु सिंचाई करनी चाहिए तथा फोरेट 10 जी 3 से 4 ग्राम या फॉलीडाल 2 प्रतिशत धूल 10 से 15 ग्राम प्रति पौधा गुड़ाई करके मृदा में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।



गुलाब

- रजनीगंधा में माहूं आदि का आक्रमण होता है। विशेष रूप से लम्बे समय तक आकाश में बादल छाये रहने पर या समुचित धूप न मिलने पर इसके निवारण हेतु 0.25 प्रतिशत मैलाथियॉन के घोल का छिड़काव करना चाहिए। टिड्डे नई पत्तियों एवं फूलों को प्रभावित करते हैं। 5 प्रतिशत कान्फीडोर का छिड़काव करके इसे रोका जा सकता है। लाल चींटियां अत्यन्त सूक्ष्मजीव हैं, जो पत्तियों की निचली सतह पर मिलती हैं। यह पौधों का रस चूसकर पत्तियों को पीला या सफेद, भूरा बना देती है। 0.2 प्रतिशत केलथेन या मोनोक्रोटोफॉस के छिड़काव द्वारा इन्हें नियंत्रित किया जा सकता है।
- ग्लेडियोलस की मुड़ी हुई टहनियों को निकाल दें तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। घनकंदों की बुआई के पश्चात अगेती किस्मों में लगभग 60-65 दिनों में, मध्यम किस्मों में 80-85 दिनों तथा पछेती किस्मों में 100-110 दिनों में पुष्प उत्पादन शुरू हो जाता है। पुष्प दंडिकाओं को काटने का समय बाजार की दूरी पर निर्भर करता है।
- एल्स्ट्रोमीरिया में स्टेकिंग, कॉरनेशन को खेतों में लगाना चाहिए। जरबेरा, लिलियम में समय-समय पर सिंचाई एवं निराई गुड़ाई करें।
- फूलों या स्पाइकों की कटाई सुबह के समय करनी चाहिए। कटाई के बाद डंडियों को बाल्टी में भरे पानी में रखना चाहिए। यदि पुष्प दूर भेजना हो, तो डंडी के नीचे की कली में जैसे ही रंग दिखाई देना शुरू हो जाये, तो काट लेना चाहिए तथा सौ-सौ के गुच्छों में बांधकर बाजार में भेजना चाहिए। यदि जल्दी प्रयोग में लाना हो तो तीन-चार पुष्प अवश्य पूर्ण विकसित होने चाहिए।



ग्लेडियोलस

- इसमें झुलसा, कंद सड़न एवं पत्तियों के सूखने का रोग लगता है। इनके नियंत्रण हेतु 0.05 प्रतिशत ओरियोफैंजि का घोल बनाकर या 0.2 प्रतिशत बाविस्टीन अथवा वेलनेट का घोल बनाकर 10 से 12 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिए।
- इसमें माहूं एवं लाल सूंडी कीट लगते हैं। इनकी रोकथाम के लिए रोगार 30 ई.सी. को 250 मि.ली. दवा 250 लीटर अर्थात 1 मि.ली. दवा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।



अमरूद

सिंचाई व निराई-गुड़ाई करें। अमरूद, पपीते, आंवले और नीबू के पके फलों की तुड़ाई करें। फलों के पुराने बागों की निराई-गुड़ाई एवं सफाई का कार्य करें।

- आम के शूट गॉल कीट से बचाव हेतु दिसंबर-जनवरी के महीने में गांठ से नीचे थोड़ी सी पुरानी लकड़ी के साथ काट कर जला दें। दिसंबर-जनवरी के महीने में पुष्पक्रमों को काट दें।
- कागजी कलां नीबू की दूसरी फसल इस माह में तैयार हो जाती है। ठीक प्रकार से फलों की तुड़ाई कर प्रसंस्करण द्वारा अधिक लाभ कमाया जा सकता है। नीबूवर्गीय फलदार वृक्षों जैसे किन्नों में करना खट्टा और सोह सर्कार के मूल वृंतों का उपयोग कर किन्नों में फलों की उपलब्धता इस माह तक सुनिश्चित की जा सकती है।
- अंगूर की बेलें 17 जनवरी से 17 फरवरी तक 10 फुट के फासले पर लगा दें। नई बेलों में गोबर की खाद 20 कि.ग्रा. प्रति बेल जनवरी में देकर सिंचाई करें। बेल चढ़ाने के तरीकों में हैड, निफिन, टेलीफोन तथा बाबर मुख्य हैं। इनका चुनाव किस्मों के अनुसार करें। अंगूर में कटाई-छंटाई का कार्य पूरा कर लें। अंगूर में प्रथम वर्ष गोबर/कम्पोस्ट खाद के अलावा नाइट्रोजन 100 ग्राम, फॉस्फेट 60 ग्राम व पोटाश 80 ग्राम प्रति पौधा आवश्यक होता है। 5 वर्ष या इससे ऊपर यह मात्रा बढ़कर नाइट्रोजन 500 ग्राम, फॉस्फेट 300 ग्राम व पोटाश 400 ग्राम हो जाती है। फॉस्फोरस की सम्पूर्ण मात्रा तथा नाइट्रोजन व पोटाश की आधी मात्रा कटाई-छंटाई के बाद जनवरी में अवश्य दें।

आम

भुनगा कीट आम की फसल को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। इस कीट के लार्वा एवं वयस्क कीट कोमल पत्तियों एवं पुष्पक्रमों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं। इसकी मादा 100-200 तक अंडे नई पत्तियों एवं मुलायम प्ररोह में देती है। इनका जीवनचक्र 12-22 दिनों में पूरा हो जाता है। इसका प्रकोप जनवरी-फरवरी से शुरू हो जाता है। आम के भुनगा कीट से बचने के लिए मोनोक्रोटोफॉस नामक रसायन की 4 मि.ली. मात्रा को 10 लीटर पानी में मिलाकर या कार्बोरिल 0.2 फीसदी का छिड़काव करें। इसके अलावा बिवेरिया बेसिआना फफूंद के 0.5 फीसदी घोल या नीम तेल 3000 पीपीएम प्रति 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से भी राहत मिल जाएगी।



सफेद चूर्णी रोग : इस रोग के प्रभाव से रोगग्रस्त भाग सफेद दिखाई पड़ने लगता है। इसकी वजह से मंजरियां और फूल सूखकर गिर जाते हैं। इस रोग के लक्षण दिखाई देते ही आम के पेड़ों पर 5 प्रतिशत वाले गंधक के घोल का छिड़काव करें। इसके अलावा 500 लीटर पानी में 250 ग्राम कैराथेन घोलकर छिड़काव करने से भी रोग पर काबू पाया जा सकता है। जिन क्षेत्रों में बौर आने के समय मौसम असामान्य रहा हो, वहां प्रत्येक हालत में सुरक्षात्मक उपाय के आधार पर 0.2 प्रतिशत वाले गंधक के घोल का छिड़काव करें एवं आवश्यकतानुसार दोहराएं।

एंथ्रेक्नोस : यह रोग अधिक नमी वाले क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है। इसका आक्रमण पौधों के पत्तों, शाखाओं और फूलों जैसे मुलायम भागों पर अधिक होता है। प्रभावित हिस्सों में गहरे भूरे रंग के धब्बे आ जाते हैं। रोग के लक्षण दिखाई देते ही आम के पेड़ों पर 0.2 प्रतिशत जिनैब का छिड़काव करें।

आंवला

आंवला के बाग में गुड़ाई करें एवं थाले बनायें। आंवला के एक वर्ष के पौधे के लिए 10 कि.ग्रा. गोबर/कम्पोस्ट खाद, नाइट्रोजन 100 ग्राम, फॉस्फेट 50 ग्राम व पोटाश 75 ग्राम देना आवश्यक है। 10 वर्ष या उससे ऊपर के पौधे में यह मात्रा बढ़कर 100 कि.ग्रा. गोबर/कम्पोस्ट खाद, नाइट्रोजन 1 कि.ग्रा., फॉस्फेट 500 ग्राम व पोटाश 750 ग्राम का प्रयोग करें। उक्त दर से पूरा फॉस्फोरस, आधी नाइट्रोजन व आधी पोटाश की मात्रा का प्रयोग जनवरी माह से करें।

मृदु सड़न: आंवले में मृदु सड़न दिसंबर से फरवरी के मध्य अधिक देखी जा सकती है। संक्रमित भाग पर जलासिक्त भूरे रंग का धब्बा बनाता है, जो पूरे फल को लगभग 8 दिनों में आच्छादित कर फल के आकार को विकृत कर देता है। ऐसे तो यह रोग छोटे तथा परिपक्व फल, दोनों को प्रभावित करता है, किन्तु परिपक्व फलों में इसका प्रकोप अधिक होता है। तुड़ाई उपरांत फलों को डाइफोलेटान (0.15 प्रतिशत), डाइथेन एम-45 या बाविस्टीन (0.1 प्रतिशत) से उपचारित करके भंडारित करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है।

गुठलीभेदक: यह कीट जून से जनवरी तक क्रियाशील रहता है। अंडे, फल में एक छोटा सा गड्ढा बनाकर बाह्य सतह से नीचे दिए जाते हैं। इसका लार्वा निकलने के बाद गूदे से होता हुआ गुठली को छेदता अंदर चला जाता है और बीजों को खाकर पूर्णत: नष्ट कर देता है। इस कीट का प्रकोप देसी एवं बनारसी प्रजाति के आंवलों पर देखा गया है। अधिक प्रकोप होने पर प्रथम छिड़काव 0.2 प्रतिशत कार्बेरिल या 0.04 प्रतिशत मोनोक्रोटोफॉस या 0.05 प्रतिशत क्वीनलफॉस कीटनाशी का फलों के मटर के दाने के बराबर की अवस्था में करना चाहिए। यदि आवश्यकता हो, तो दूसरा छिड़काव कीटनाशी बदल कर 15 दिनों के अंतराल पर करें।